नेता समय-समय पर पार्टी कांग्रेस में या चुनाव बदलते रहते थे।

जब से समाज तथा व्यक्ति के बारे में चिन्तन आरंभ हुआ है, तभी से विचारधारा का भी जन्म माना जा सकता है। सामाजिक विचारधारा एक मूल्यात्मक व्यवस्था है जो व्यक्ति, समाज, राज्य, नैतिकता, संस्कृति तथा अन्य सामाजिक शक्तियों के मूल्यों, आदर्शों, वास्तविकताओं तथा संस्थाओं आदि को निश्चित करती है। हर विचारधारा विचारों की एक प्रणाली होती है, जो वास्तविकताओं, आदर्शों तथा मूल्यों का विश्लेषण करती है तथा एक सामाजिक आर्थिक उद्देश्य की पूर्ति करती है।

समय तथा परिस्थितियों में परिवर्तन एवं समाज में वर्गों की स्थिति के अनुसार विचारधाराओं का उदय होता है और उनमें परिवर्तन होता रहता है। हर विचारधारा एक वर्गविशेष के वर्गहित तथा मूल्यों के दार्शनिक विश्लेषण पर आधारित होती है और इसी आधार पर ही वैज्ञानिक विधि से समझी जा सकती है। जैसे-जैसे वर्गों की स्थिति में परिवर्तन होता जाता है, वैसे-वैसे विचारधारा के स्वरूप में भी परिवर्तन आता जाता है। विचारधाराएं वर्गों की सामाजिक-आर्थिक आवश्यकता अनुसार तथा वर्गों के विकास के अनुसार बदलती तथा विकसित होती रहती हैं। समय, परिस्थितियों तथा वर्ग की भूमिका के अनुसार ही विचारधारा प्रगतिशील या प्रगतिविरोधी, क्रांतिकारी या क्रांतिविरोधी बन जाती है। आज की प्रगतिशील तथा क्रांतिकारी विचारधारा वर्ग तथा वर्ग संघर्ष के आधार पर पूरी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के संदर्भ में ही अच्छी प्रकार समझी जा सकती है। उदारवाद उभरते हुए मध्यम वर्ग की विचारधारा मानी जाती है; मजदूर तथा मेहनतकश वर्ग की विचारधारा मार्क्सवाद है, तथा संकट में फंसे पूंजीपति वर्ग की विचारधारा फासीवादी मानी जाती है। हर विचारधारा विभिन्न दृष्टिकोणों से विभिन्न बातों की व्याख्या करती है। राजनैतिक दृष्टिकोण से विचारधारा की मुख्य बातें व्यक्ति, समाज तथा राज्य से संबंधित रहती हैं तथा ये राजनैतिक दर्शन की मूल अंग हैं।

## विचारधारा तथा व्यक्ति

मानव हर समाज तथा सामाजिक व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है और हर विचारधारा मानव स्वभाव की स्पष्ट या अस्पष्ट व्याख्या करती है। जैसे, उदारवाद मानव स्वभाव को स्वार्थी, अहंकारवादी तथा तर्कसंगत मानता है, मार्क्सवाद इसे सामाजिक परिस्थितियों तथा सम्बन्धों पर आधारित मानता है, फासीवाद मानव को शक्ति एवं गौरव का पूजक मानता है।

हर विचारधारा मानव के कल्याण, तत्व, उद्देश्य तथा सार इत्यादि के बारे में विचार प्रकट करती है। उदारवाद के अनुसार व्यक्ति का उद्देश्य अपना भला, सुख तथा विकास करना है, मार्क्सवाद के अनुसार सामाजिकता को प्राप्त करना है; मार्क्सवाद व्यक्ति तथा समाज के संबंध को वर्गविश्लेषण के आधार पर देखते हुए यह मानता है कि समाज में वर्ग के सदस्य के रूप में व्यक्ति रहता है तथा वर्ग मुख्य है; फासीवाद राज्य तथा समाज को एक मानते हुए व्यक्ति को राज्य तथा समाज पर बलिदान कर देता है। व्यक्ति तथा राज्य या सत्ता का आपसी संबंध क्या है और क्या होना चाहिए? यह भी हर विचारधारा बताती है। उदारवाद के अनुसार राज्य व्यक्ति द्वारा निर्मित है तथा व्यक्ति के लिए है; मार्क्सवाद राज्य को वर्गयंत्र मानते हुए व्यक्तियों पर दमन का यंत्र मानता है; फासीवाद राज्य को सर्वोच्च नैतिकता, पृथ्वी पर भगवान का रूप मानते हुए व्यक्ति को राज्य के लिए मानता है।

हर विचारधारा व्यक्ति तथा स्वतंत्रता और अधिकार के बारे में भी अपने विचार व्यक्त करती है। उदारवाद, व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता तथा अधिकारों को अत्यन्त आवश्यक मानता है; मार्क्सवाद स्वतंत्रता को न केवल आवश्यक मानता है बल्कि वास्तव में इसे कैसे प्राप्त किया जाए? यह भी बताता है; फासीवाद व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अधिकारों को महत्व नहीं देता।

## विचारधारा तथा समाज

हर विचारधारा समाज के बारे में कुछ मूलभूत बातों पर प्रकाश डालती है।

समाज की प्रकृति क्या है ? यह हर सामाजिक विचारधारा में स्पष्ट या अस्पष्ट होती है। उदारवाद समाज को नियंत्रित या अनियंत्रित बाजारू समाज मानता है; मार्क्सवाद इसे आर्थिक व्यवस्था के अनुसार वर्गविभाजित मानता है; तथा पूंजीवाद इसे आंगिक मानता है।

समाज का संगठन कैसा हो? इस बारे में हर विचारधारा विचार व्यक्त करती है। उदारवाद के अनुसार समाज खुला समाज होना चाहिए जिसमें स्वतंत्र व्यापार, प्रतियोगिता, स्वतंत्र विचारों का आदान-प्रदान तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता को सर्वोच्च माना जाना चाहिए; मार्क्सवाद वर्गहीन समाज को अच्छा तथा संगठित समाज समझता है; फासीवाद समाज के संगठन में व्यवस्था तथा अनुशासन को महत्व देता है।

हर समाज व्यक्तियों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति की एक महत्वपूर्ण संस्था होता है। अतः समाज के आर्थिक संगठन के बारे में भी हर विचारधारा स्पष्ट या अस्पष्ट विचार देती है। उदारवाद स्वतंत्र अर्थव्यवस्था का समर्थक रहा है तथा अब राज्य द्वारा कुछ भागों में नियंत्रित मिश्रित अर्थव्यवस्था का समर्थक है; फासीवाद राज्य पूर्णतः नियंत्रित अर्थव्यवस्था तथा राज्य एकाधिकार पूंजीवाद का समर्थक है।

हर सामाजिक विचारधारा समाज की मुख्य समस्याओं पर प्रकाश डालती है। उदारवाद के अनुसार समाज की मुख्य समस्या अनेकता में एकता, सामंजस्य, तालमेल, विवादों का निपटारा, सामान्य कल्याण आदि है; मार्क्सवाद के अनुसार समाज की मुख्य समस्या वर्गसंघर्ष तथा वर्गविहीन